मुँह बोले भाई नहीं.. वह मेरा
अपना भाई है

"विशाल!.. मुझे छोड़ दो, जाने दो.. कबीर..! जाना है मुझे.." रोज़ की तरह आज की रात भी मैंने नींद से उठकर चिल्लाई।

"निहारिका.. क्या हुआ तुम्हें? कुछ नहीं है.. मैं हूँ ना" ये कहकर रघु मुझे गले से लगाया। तब मुझे समझ आया कि मैं सपना देख रही थी।

"सोरी.. वो फिल्म दिल से जाती ही नहीं है, मुझे बहुत पसंद है वो फिल्म। इसलिए रोज़ रात में उसी के सपने देखते है और चिल्लाते है" रघु से मैंने झूठ बोली।

"हाँ पता है, इट्स ओके। अब तुम सो जाओ।"

"ठीक है।"

~

मैं जल्दी-जल्दी तैयार हो रही थी। विशाल के साथ फिल्म देखने केलिए जाती थी मुझे। घरवाले और दोस्तों मुझसे पूछता है "क्या चल रहे हो तुम दोनों के बीच?" ये कहकर मैं थक चुकी थी कि विशाल मेरा मुँह बोले भाई है.. अपना भाई है।

मैं घर से निकल रही थी, तभी पीछे से आवाज़ आया:

"निहारिका! कहाँ जा रहे हो तुम?"

(Note: Graded articles may be published in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

"वो मैं विशाल के साथ.."

"तुम उसके साथ नहीं जाओगे"

"अरे.. मैं कितनी बार ~~अमर~~ आप से कहूँ कि विशाल मेरा भाई जैसा है।" तभी माँ आई मुझे उमंग से बचाने केलिए।

"उमंग.. जाने दो उसे। विशाल ही तो है। पिछले छह साल से जानते हैं हम उसे। निहु की मुँह बोले भाई है वह।"

"बिगड़ चुकी है आपकी लड़की। देखना एक दिन वह आपकी लाडली आपको नरक करवायेगी।"

"चुप रहो तुम! निहु तुम जाओ बेटा, वरना फिल्म केलिए देर हो जाओगी।"

"हाँ माँ, मैं जाती हूँ.. बाई"

मुझे अब भी याद है। मैं बारह साल की थी जब मैं विशाल से मिली। तब उस केलिए सब कुछ नया था। नई जगह, नए लोग, नई स्कूल.. वो घुँघराले बाल, डरी हुई आँखें, काँपती हुई पैरों से कुछ दूर रही था वह।

"मैं निहारिका और तुम?"

"मैं आम विशाल वर्मा"

फिर हुआ हमारा दोस्ती का शुरुवात। उस दिन से लेकर आज तक सब कुछ हम साथ में करता है। उसके बिना

मैं और मेरे बिना वह .. दो ही नहीं सकता। इतने गहरे दोस्त हैं हम .. मैं बहन ~~थी~~ है उसकी और विशाल भाई ~~था~~ है मेरा।

उमंग मेरा अच्छा भाई है। पर उससे ज्यादा मैं विशाल को अपनी भाई मानती हूँ। उमंग समझता नहीं है मुझे और शायद विशाल से ज्यादा मुझसे प्यार भी ~~~~ नहीं करता।

"निखिल .. मेरी नाश्ता कहा है? आफिस केलिए लेट हो जायगी मैं" रसोई में पुरियाँ बना रही थी मैं। न जाने कब मैं अपनी ख्यालों ~~में~~ में खो गई।

"जी अभी लाई"

मैं जल्दी - जल्दी पुरियाँ लेकर रघु की ओर दौड़ी।

"अरे - तुम आज आफिस नहीं जा रहे हो क्या?"

"नहीं .. मेरे सिर में दर्द है।"

"डॉक्टर के पास चलू क्या?"

"नहीं .. थोड़ी देर आराम करेगी तो दर्द चला जायगा"।

"ठीक है";

नाश्ता खत्म करने के बाद रघु ~~~~ आफिस केलिए निकला।

"तुम ठीक हो ना?"

"हाँ मैं ठीक हूँ रघु"

फिर ~~मुझसे~~ ~~अलग~~ मुझे गले से लगाकर वह चला गया।
मैं अपनी कमरे में गई और ~~बिस्तर~~ बिस्तर पर लेटी। कुछ देर बाद मेरी पुरानी डायरी मिली मुझे। बस ऐसे ही मैं ~~अ~~ अपनी ~~पु~~ पुरानी स्यूट केस खोली थी। उसी में से मुझे मेरी पाँच साल ~~पु~~ पुरानी डायरी मिली। उस पन्नों को ~~छू~~ छूने से ही मेरी आँखें भर गई।

~

बात था 2007 का, उम्र थी मेरी अठारह। विशाल के साथ घूम रही थी तभी मुझे नज़र आई वह। मैं ~~अर~~ उसे देखा वह मुझे देखी, मेरी दिल में उसका नाम लिख दिया था मैं। पर हँसने की बात तो ये थी कि तब मुझे उसका नाम ही नहीं पता था। फिर कैसे मैंने अपने दिल में उसका नाम लिख दिया? विशाल का दोस्त था वह। विशाल मुझे उससे मिलवाया।

"आपका नाम?" मैंने अपनी धड़कते हुए दिल को शांत करके उससे पूछी। तभी वह मुस्कुराकर मेरी हाथ पकड़कर उसमें अपनी ~~उंगलियों~~ उंगली से उसका नाम लिखा: 'कबीर'।
विशाल हमारे प्यार को समझते थे। कहते थे कि किसी की नज़र लग जायेगी हमारे प्यार को। हमारे प्यार के हर मोड़ पर

विशाल हमारे साथ थे।

एक दिन कबीर मुझसे उसकी ~~भाषा~~ भाषा में पूछा: "क्या तेरा भाई हमारी बात मानेगा?"

"कौन विशाल? सबसे ज्यादा विशाल ही हमारा साथ देगा।"

"नहीं यार.. अंग, तेरा सगा भाई।"

"वो तो मुझे पता नहीं.. पर मैं सिर्फ विशाल को मानती हूँ।"

"तब क्या होगा जब अंग को ये सब पता चलेगा?"

"वो भी मुझे पता नहीं, लेकिन मुझे यह ज़रूर पता है कि तुम मेरी ज़िंदगी में हमेशा रहोगे।"

तब कबीर मुस्कुराकर मेरे गाल में चुंबन दिया और मुझे गले से लगाया। यह ये था उसका मुझसे 'आई लव यू' बोलने का तरीका। तभी पता नहीं कैसे, लेकिन अंग आ गया। मैं विशाल के घर में, उसके कमरे में थी कबीर के साथ। अंग आ गया और मुझे खींचकर ले गया। तभी दूसरे कमरे से विशाल आई। विशाल हाथ जोड़कर अंग से कहा कि हम मैं और कबीर प्यार करते हैं एक दूसरे से, जाने दो हमें, लेकिन नहीं। अंग को मेरी खुशी से ज्यादा उसका कुलाभिमान की परवाह था। विशाल और कबीर को अंग गुंडों के साथ मिलकर बहुत

मारा। ~~मुझे वक्त से किसी और पगल~~ उमंग वो शहर छोड़कर नई शहर में मुझे ले गया। कॉलेज के बाद ज़बरदस्ती मुझे रघु से शादी करवाया। मैं कुछ नहीं कर सकी। अंदर से टूट चुकी थी मैं.. मर चुकी थी मैं।

उमंग कहते थे कि कबीर की खामोशी एक दिन हमारे प्यार को भी खामोश कर देंगे। मैं और रघु ~~कर~~ बात तो करते हैं, लेकिन शब्दों को महसूस नहीं कर ~~पाते~~ पाते हैं। हम दोनों हर बात में पूरा है, पर हमारा प्यार अधूरा है। कबीर अधूरा था ~~लेकिन~~ पर उसका प्यार पूरा था। यह बात मेरा अपना भाई नहीं समझ पाया लेकिन विशाल समझा। वह दोनों कहा है ये पता नहीं है मुझे। पर जहाँ भी मैं जाती हूँ मेरी ~~आँखों~~ आँखें बस उन दोनों को ढूँढ़ती है।

उमंग को मेरी जिंदगी और मेरी खुशी की परवाह नहीं थी। लेकिन विशाल को सिर्फ मेरी खुशी की परवाह था। मेरी एक मुस्कान के लिए वह क्या कुछ नहीं करते थे। आज जब लोग मुझसे पूछते है कि क्या मेरा कोई भाई है तो मैं सिर्फ विशाल का नाम लेती हैं। विशाल सिर्फ मेरी मुँह बोले भाई नहीं मेरी अपनी भाई है।